श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ९

फरवरी 2025

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना: १. नाम और इनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोड़ना नहीं है, जोड़ने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे पीछे आए पेपर जांचे नहीं जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. चौदवें गुणस्थानक की स्थिति..... ह्रस्वोस्वर बोले उतनी ही होती है।
२. धर्मघोष सूरि की कारकिर्दी का मुख्य अंग ..... है।
३. देवी..... को नमन करनेवाली जनता के लक्ष्मी, संपत्ति, कीर्ति, यश में वृद्धि करती है।
४. पृथ्वीकायादि दस स्थानक के जीवों की गति.....के तीन दंडक में होती है।
५. धर्मघोष सूरि के उपदेश से ..... श्रेष्ठि ने स्वयं के इक्किस मित्रों के साथ दीक्षा ली।
६. प्रभु महावीर..... के कारण ब्राह्मण कुल में आये।
७. सूक्ष्मकाय योग में रहकर पर्वत की तरह स्थिर रहना यही..... है।
८. तीर्थ संघ निकालने से ..... को संघवी पद प्राप्त हुआ।
९. करवत रखवाने के महत्व के केन्द्र के रुप में .....स्थान में देशभर में प्रसिद्धि प्राप्त की थी।
१०. ..... को सदा निरुपद्रवी वातावरण तुष्टि और पुष्टि देने वाली हे देवी ! तुम जय पाओ।
११. सयोगी गुणस्थान के अंत में .....अवगाहना करता है।
१२. राजस्थान ने प्रसंगोपात वीरपुरुषो और..... की अमुल्य भेट धरी है।
१३. वस्तु को प्राप्त करने के बाद उसे ..... ताकत जरुरी है।
१४. गर्भज तिर्यंच की ..... सभी दंडको में होती है।
१५. .....उपासको का शुभ करने वाली हे देवी ! तुम जगत में जय पाओ।
१६. पुण्य से मिली सत्ता और संपत्ति का अभिमान..... को हुआ।
१७. चरित्रनायक के..... से चमत्कृत होकर जयप्रभसूरि ने अंचलगच्छ की सभाचारी स्वीकार की।
१८. अपने सामान्य सपने को भी ..... उदय साकार होने देना नही।
१९. नौ दंडको में एक ही ..... होता है।
२०. यह ..... कार्य का साधन बनने में असमर्थ है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. कौनसा ध्यान मुक्ति महेल के प्रवेशद्वार समान है ?
२. कोणिक की अधम मनोदशा का कारण क्या था ?
३. अयोगी केवली गुणस्थानवर्ती परमेष्ठि किसमें अत्यंत आनंद मनाते है ?
४. क्षणिक ऐश्वर्य का मद करके भवांतर के लिये क्या उपार्जन नहीं करना चाहिये ?
५. देवी सिद्धि, शांति और परम प्रमोद किसे देती है ?
६. कौनसे आचार्य ने एक साथ बीस शिष्यों को आचार्य पद पर स्थापित किया ?
७. सयोगी गुणस्थानक में कौनसे कर्म का बन्ध होता है ?
८. कौन से जीव मनुष्यो में नहीं जाते ?
९. इन्द्र महाराजा आकर के किनके चरणों में झुके ?
१०. कौनसा ध्यान केवल व्यवहार मात्र है ?
११. जयसिंह सूरि के समय में अंचलगच्छ का भाग्य रवि कहाँ तप रहा था ?
१२. पुण्य के नाश के साथ किसका नाश निश्चित है ?
१३. समुछिन्न क्रिया निवृति ध्यान में कौनसी क्रिया की सर्वथा निवृति होती है ?
१४. धृतलहाण करने वाले किनके वंशजो का वर्णन प्राचीण प्रमाण ग्रंथो में से उपलब्ध होता है।
१५. किसने कभी भी किसी की सद्गति होने नहीं दी।

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) विगलाई २) त्रयोदश ३) श्री ४) निरतानां ५) धृति ६) स्वस्ति ७) शिव ८) वेद्य ९) जियाः १०) अेगो
११) प्रददे १२) श्वापद १३) इति १४) जंति १५) प्रमुह १६) इत्थि १७) तुल्यं १८) प्रदानाय १९) अेगो २०) थिर

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) तिमिपुर	१) शुभ	६) शरीर ६ फूट	६) सिद्ध पर्याय
२) मति	२) सिद्ध अवगाहना ४ फूट	७) मुक्ति	७) स्त्री पुरुष दोही वेद
३) सुभुम चक्रवर्ती	३) अणसण	८) दुर्गति	८) लाभमद
४) देवों के १३ दंडक	४) छठ्ठी नरक	९) कोणिक	९) रचनात्मक अभिगम
५) शतपदी	५) कुलमद	१०) कनिष्ठ उपासक	१०) विचारशक्ति

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. शांतिनाथ भगवान को नमन करने वाली जनता को देवी कितनी वस्तु प्रदान करती है ?
२. भय कितने प्रकार के हैं ?
३. अयोगी गुणस्थान के उपान्त्य समय में समकाल में केवली कितने स्पर्श खपाते हैं ?
४. गर्भज तिर्यंचो की गति-अगति कितने दंडक में होती है ?
५. एक आचार्य ने मन में गर्व धारण कर कितने पूर्व पक्ष खडे किये ?
६. चक्रवर्ती की सेवा में कितने देव हाजर रहते है ?
७. महावीर स्वामी कितनी रात ब्राह्मण कुल में रहे ?
८. चौदहवें गुणस्थानक के अंत में कितनी प्रकृति का क्षय करके केवली मुक्ति में जाते है ?
९. कुल मद कितने है ?
१०. एक ही नपुंसक वेद कितने दंडक में होता है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (x) बताओ -

१. जेता शाह ने देढ लाख टंक खर्च करके जेता जिन प्रासाद बनाया ।
२. बुद्धि याने अच्छे बुरे का निर्णय करने की निर्णयात्मक विचार शक्ति ।
३. सम्यग दृष्टि वाले जीवो को धृति, रति, मति और बुद्धि देने वाली हे देवी ! तुम विजय पाओ ।
४. वि.सं. १२३४ में भट्ठोहरी गाँव में गुरुने उन्हें योग्य जानकर उन्हें आचार्य पद पर विभुषित किया ।
५. दशार्णभद्र भाग्यशाली थे उन्हें जगाने वाले इन्द्र महाराज मिले ।
६. तेउकाय और वायुकाय की गति पृथ्वीकायादि नौ पदों में होती है ।
७. संमुर्च्छिम मनुष्य सभी दंडको में उत्पन्न होते हैं ।
८. व्रत ग्रहण करने के पश्चात नवोदित मुनि ने शास्त्रार्थ में अग्रिम सिद्धियाँ हासिल की ।
९. यह सूक्ष्म काय योग कार्य का साधन बनने में असमर्थ है ।
१०. मद करने से भवांतर में वोही वस्तु दुर्लभ बन जाती है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. सूक्ष्म काय योग का भी अभाव हो तो ध्यान किस तरह संभवित है ?
२. धर्म आराधना करते वक्त भी आ जाते मद से अनेक आत्माये मार्ग भूली है ।
३. हे भगवति तुम्हारी शक्ति परापर रहस्य द्वारा जगत में जय पाती है ।
४. अेक सगोत्री नग्न हुआ है ऐसा सुना है उसके उपर ।
५. गर्भज मनुष्य सब दंडको में उत्पन्न होते हैं ।
६. विद्याधर गच्छ के श्रावक उक्त प्रसंग से अंचलगच्छिय हुए ।
७. बाकी कर्मोका क्षय होते ही एक समय में आत्मा सिद्धशिला पर पहुँच जाती है ।
८. आज तो सत्ता का मद कदम कदम पर देखने मिलता है ।
९. किसी स्थान पर उन्हें महाकवि भी कहा गया है ।
१०. भक्तानां जन्तुनाम शुभावहे ! नित्यमुद्यते देवी ! ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -

१. जाति मद २) शैलेशीकरण ३) गति आगति द्वार ४) भय उद्रव शांति प्रार्थना समझाओ १५
५. शतपदी और उसका अन्तिम अध्याय ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com